Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 11, November-2018, ISSN 2230-7540

मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन

Chirnji Lal Raigar*

Assistant Professor, Department of Geography, Government PG College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan

शोध पत्र सारांश:- *प्रस्तुत शोध पत्र मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों के भौगोलिक अध्ययन से संबंधित है। मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योग अधिशेष ग्रामीण श्रम को रोजगार प्रदान कर रहे हैं। ये उद्योग मेवात क्षेत्र के ग्रामीण भागों में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी/ प्रच्छन्न रोजगार की समस्या को दूर करने में सक्षम हैं। मेवात क्षेत्र की मुख्य चुनौती यह है कि राजस्थान सरकार अपनी योजनाबद्ध और नीतिगत हस्तक्षेप को प्रभावी ढंग से लागू करके ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी सामाजिक-आर्थिक संरचना, कृषि उत्पादन प्रणाली और बुनियादी कृषि विनिर्माण विशेषताओं की पहचान को कम किए बिना एक सर्वांगीण औद्योगिक विकास सुनिश्चित कर सके। अलवर एवं भरतपुर ज़िले का मेवात क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों और उनके आस-पास कृषि-आधारित उद्योगों का विकसित करने, आकर्षक बनाने तथा स्थिरता प्रदान करने की क्षमता रखता है। 'कृषि उद्योग' एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है जिसमें विभिन्न औद्योगिक, प्रसंस्करण और विनिर्माण गतिविधियों का समावेश कृषि पर आधारित कच्चे माल पर होता है और उन गतिविधियों और सेवाओं को भी शामिल किया जाता है जो कृषि से प्राप्त होती हैं। कृषि और उद्योग विकास प्रक्रिया में परस्पर एक दूसरे पर निर्भर होते हैं कृषि आधारित उद्योग आपसी सम्बन्धों के कारण एक-दूसरे के पूरक भी होते हैं। कृषि उद्योग को शक्ति प्रदान करती है। मेवात क्षेत्र के कृषि आधारित उद्योगों के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2017-18 में कृषि-आधारित उद्योगों का 33 प्रतिशत कुल शुद्ध मूल्य संवर्धन के लिए केवल 20 प्रतिशत साझा किया गया, भले ही कुल श्रमिकों का 40 प्रतिशत इस क्षेत्र में लगे हुए थे। वर्ष 2017-18 में मेवात क्षेत्र में कुल 1024 कृषि-आधारित इकाईयां थीं। कृषि उद्योगों की कुल संख्या में खाद्य उत्पादों और पेय पदार्थों के निर्माता कम्पनियों का 42 प्रतिशत हिस्सा है अतः मेवात क्षेत्र में कृषि-आधारित उद्योगों के विकास की बड़ी क्षमता है।*

शब्द कुँजी:- *कृषि-आधारित उद्योग, मेवात क्षेत्र में कृषि-आधारित उद्योगों का विकास, ग्रामीण और शहरी मेवात क्षेत्र में औद्योगिक परिदृश्य, कृषि-आधारित उद्योगों का वर्गीकरण एवं निष्कर्ष।*

----------X----------

प्रस्तावना:

कृषि-आधारित उद्योग मेवात क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी लाभ की धारणा के अनुरूप हैं। यहाँ पर कृषि आधारित उद्योग अधिशेष ग्रामीण श्रम को रोजगार प्रदान कर रहे हैं। ये उद्योग मेवात क्षेत्र के ग्रामीण भागों में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी/ प्रच्छन्न रोजगार की समस्या को दूर करने में सक्षम हैं। मेवात क्षेत्र की मुख्य चुनौती यह है कि राजस्थान सरकार अपनी योजनाबद्ध और नीतिगत हस्तक्षेप को प्रभावी ढंग से लागू करके ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी सामाजिक-आर्थिक संरचना, कृषि उत्पादन प्रणाली और बुनियादी कृषि विनिर्माण विशेषताओं की पहचान को कम किए बिना एक सर्वांगीण औद्योगिक विकास सुनिश्चित कर सके। भारत के विकासशील राज्यों की आर्थिक नीतियों ने हमेशा न केवल उत्पाद और उत्पादकता वृद्धि के माध्यम से, बल्कि प्रसंस्करण और विनिर्माण के माध्यम से कृषि उत्पादों में प्रणालीगत मूल्य-संवर्धन द्वारा किसानों की आय में वृद्धि के प्रयास किए हैं। राजस्थान की जनसंख्या कृषि और सम्बद्ध गतिविधियों में सलग्न है। मेवात क्षेत्र के किसान काफी हद तक असंगठित हैं। वे अपने विपणन योग्य अधिशेष के निपटान के लिए सीमावर्ती राज्य हरियाणा एवं उत्तरप्रदेश पर निर्भर रहते हैं। मेवात के ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजीगत सम्पत्ति एवं आर्थिक विकास की कमी के कारण किसान अपनी उपज बाहरी राज्यों में बेचने के लिए मजबूर होता है। प्राथमिक कृषि उत्पादन से न्यून आय और प्रसंस्करण तथा कृषि-मूल्य श्रृंखला में निवेश की कमी के

www.ignited.in

कारण कृषि के लाभ में तेजी से कमी आई है जिससे मेवात क्षेत्र के कृषि आधारित उद्योगों पर दवाब आ गया है।

अध्ययन क्षेत्र:

अलवर एवं भरतपुर जिले का मेव बाहुल्य क्षेत्र जो मेवात क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान का मेवात क्षेत्र 27 डिग्री 03 मिनट उत्तरी अक्षांश से 28 डिग्री 12 मिनट उत्तरी अक्षांश एवं 76 डिग्री 10 मिनट पूर्वी देशान्तर से 78 डिग्री 15 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य 6291 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफ़ल में फैला हुआ है। अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य के दो मेव बाहुल्य जिलों अलवर एवं भरतपुर में फैला हुआ है। मेवात क्षेत्र के अंतर्गत अलवर जिले की लक्ष्मणगढ़, रामगढ़, तिजारा, मुण्डावर, किशनगढ़बास, कठूमर, उमरैण एवं कोटकासिम तथा भरतपुर की नगर, डीग एवं कामां पंचायत समितियाँ शामिल है।

उद्देश्य:

1. मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन किया गया है।
2. मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की विकास की विवेचना की गई है।
3. मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों के प्रभावों का वर्णन किया गया है।

परिकल्पना

1. मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों के विकास की अपार संभावनाएं हैं।
2. मेवात क्षेत्र के कृषि आधारित उद्योगों में निरंतर वृद्धि हो रही है।
3. मेवात क्षेत्र में कृषि उद्योग विकास हेतु सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं।

अध्ययन पद्धति एवं आकड़ो का संग्रह

प्रस्तुत अध्ययन के लिए प्रतिदर्श अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन हेतु आर्थिक उपागम का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आकड़ो का समावेश किया गया है। प्राथमिक आकड़ो का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली एवं अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आकड़ो का संग्रह जिला उद्योग केन्द्र अलवर एवं भरतपुर, रीको कार्यालय, अलवर एवं जिला रोजगार एवं श्रम कार्यालय, अलवर एवं भरतपुर, जिला सांख्यकी कार्यालय अलवर एवं भरतपुर से किया गया है।

कृषि-आधारित उद्योग:

अलवर एवं भरतपुर ज़िले का मेवात क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों और उनके आस-पास कृषि-आधारित उद्योगों का विकसित करने, आकर्षक बनाने तथा स्थिरता प्रदान करने की क्षमता रखता है। 'कृषि उद्योग' एक सर्वव्यापी अभिव्यक्ति है जिसमें विभिन्न औद्योगिक, प्रसंस्करण और विनिर्माण गतिविधियों का समावेश कृषि पर आधारित कच्चे माल पर होता है और उन गतिविधियों और सेवाओं को भी शामिल किया जाता है जो कृषि से प्राप्त होती हैं। कृषि और उद्योग विकास प्रक्रिया में परस्पर एक दूसरे पर निर्भर होते हैं कृषि आधारित उद्योग आपसी सम्बन्धों के कारण एक-दूसरे के पूरक भी होते हैं। कृषि उद्योग को शक्ति प्रदान करती है। औद्योगिक उत्पादन का उपयोग कृषि में इसके उत्पादन और उत्पादकता आधार का विस्तार करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार, कृषि आधारित उद्योग में न केवल कृषि से प्राप्त कच्चे माल का उपयोग करने वाली गतिविधियों को शामिल करता है, बल्कि उन्हें भी शामिल करता है जो आधुनिक कृषि व्यवसाय के लिए बल भी प्रदान करते हैं। आगत - निर्गत अनुबंधन और कृषि व उद्योग एक-दूसरे पर आधारित होने के कारण कृषि उद्योग दो प्रकार के होते हैं:-

1. प्रसंस्करण उद्योग या कृषि-आधारित उद्योग
2. आपूर्ति उद्योग या कृषि उद्योग

इस प्रकार, प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादन और उत्पादकता वृद्धि के लिए तैयार और विनिर्माण आदानों के माध्यम से कृषि का समर्थन करने वाली एजेंसियों को 'कृषि उद्योग' कहा जाता है, जबकि कृषि-आधारित उद्योग प्रक्रिया और मूल्य ऐसे कृषि संसाधनों को जोड़ते हैं जिनमें जमीन और पेड़-पौधे, फल और सब्जियों इत्यादि के साथ-साथ उनके दिन-प्रतिदिन के कार्यों में उपयोगी पशुधन शामिल हैं। राष्ट्रीय मानक औद्योगिक वर्गीकरण ढांचे के अनुसार, कृषि-आधारित उद्योग में खाद्य और पेय, कपड़ा, जूते और परिधान, चमड़ा, रबर, कागज और लकड़ी, तम्बाकू उत्पाद के विनिर्माण/प्रसंस्करण शामिल हैं।

www.ignited.in

मेवात क्षेत्र में कृषि-आधारित उद्योगों का विकास:

अलवर भरतपुर जिले का मेवात क्षेत्र राज्य की कृषि योग्य उपजाऊ भूमि में शामिल हैं। जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 2011 में मेवात क्षेत्र में कुल कृषकों की संख्या 77 प्रतिशत से घटकर 69 प्रतिशत रह गई। इसका कारण कृषि प्रसंस्करण और विनिर्माण के माध्यम से मूल्य-संवर्धन, अपव्यय में कमी और वृद्धिशील आय पर पर्याप्त ध्यान दिए बिना कृषि का अत्यधिक उत्पादोन्मुखीकरण होना हो सकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट हार्वेस्ट इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी ने अपनी वर्ष 2015 कीक रिपोर्ट के अनुसार ' मेवात क्षेत्र में वस्तुओं और प्रमुख फसलों की कटाई और कटाई के उपरांत होने वाली मात्रात्मक हानियों का आकलन' किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार मेवात क्षेत्र में कृषि जिन्सों की कटाई और कटाई के बाद का नुकसान अनाज के लिए 4.85-5.99 प्रतिशत, दालों के लिए 5.26- 7.28 प्रतिशत, तिलहन के लिए 3.98-7.99 प्रतिशत, फलों के लिए 4.7-9.5 प्रतिशत और सब्जियों के लिए 5.88-10.25 प्रतिशत होते हैं। मात्रात्मक नुकसान का कुल अनुमानित आर्थिक मूल्य 2018 की औसत वार्षिक कीमतों पर 189 लाख रुपए पाया गया। इस प्रकार, नुकसान को कम करने, आधुनिक कृषि प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी के संवर्धन को अपनाने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक संख्या में कृषि उद्योगों की स्थापना करना समय की मांग है। मेवात क्षेत्र में कृषि अर्थव्यवस्था के समग्र विकास के लिए कृषि आधारित उद्योगों को विकसित करना आवश्यक है। कृषि में मौजूदा मूल्यों में आ रही कमी को ध्यान में रखते हुए, मेवात ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश करना आवश्यक है ताकि उपयुक्त बुनियादी ढांचे का विकास हो सके और ग्रामीण क्षेत्रों में तथा आस-पास के आधुनिक कृषि-आधारित उद्योगों की स्थापना के लिए निजी-सार्वजनिक भागीदारी को आकर्षित किया जा सके।

ग्रामीण और शहरी मेवात क्षेत्र में औद्योगिक परिदृश्य:

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के वार्षिक सर्वेक्षण में रिपोर्ट से स्पष्ट है कि राजस्थान में अलवर एवं भरतपुर ज़िले के मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित औद्योगिक इकाईयाँ संचालित हैं। वर्ष 2017-18 में मेवात के ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा उद्योगों की संख्या कम थी लेकिन यहाँ पर उनके कुल उत्पादन और क्षेत्र में शुद्ध परिवर्धित मूल्य में समानता पाई गई। इससे पता चलता है कि मेवात क्षेत्र में अधिक ग्रामीण औद्योगिक इकाइयों की स्थापना ग्रामीण अधिशेष श्रम को न केवल रोजगार प्रदान करने में अहम भूमिका रही है बल्कि कुल औद्योगिक उत्पादन और मूल्यवर्धन में भी बड़े पैमाने पर योगदान भी दे रही है।

कृषि-आधारित उद्योगों का वर्गीकरण:

मेवात में कृषि आधारित उद्योगों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है:-

(1) फल एवं सब्जी प्रसंस्करण इकाई, डेयरी संयंत्रों, चावल मिलों, दाल मिलों आदि को शामिल करने वाली कृषि-प्रसंस्करण इकाईयाँ।

(2) चीनी, डेयरी, बेकरी, साल्वेंट निष्कर्षण, कपास इकाइयों आदि को शामिल करने वाली कृषि निर्माण इकाईयाँ।

(3) कृषि, कृषि औजार, बीज उद्योग, सिंचाई उपकरण, उर्वरक, कीटनाशक आदि के मशीनीकरण को शामिल करने वाली कृषि-इनपुट निर्माण इकाईयाँ।

ग्रामीण और कृषि-आधारित उद्योग उत्पादन, वितरण, विनिर्माण और विपणन चरणों में रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करते हैं। मेवात क्षेत्र के कृषि आधारित उद्योगों के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2017-18 में कृषि-आधारित उद्योगों का 33 प्रतिशत कुल शुद्ध मूल्य संवर्धन के लिए केवल 20 प्रतिशत साझा किया गया, भले ही कुल श्रमिकों का 40 प्रतिशत इस क्षेत्र में लगे हुए थे। इससे पता चलता है कि कृषि-आधारित औद्योगिक परिदृश्य ने स्थाई रूप से उपलब्ध संसाधनों और सरकार द्वारा विभिन्न सब्सिडी-उन्मुख केन्द्रीय योजनाओं के माध्यम से किए गए प्रयासों के लाभों को पूरी तरह से भुनाया नहीं है। वर्ष 2017-18 में मेवात क्षेत्र में कुल 1024 कृषि-आधारित इकाईयां थीं। कृषि उद्योगों की कुल संख्या में खाद्य उत्पादों और पेय पदार्थों के निर्माता कम्पनियों का 42 प्रतिशत हिस्सा है अतः मेवात क्षेत्र में कृषि-आधारित उद्योगों के विकास की बड़ी क्षमता है।

1. खाद्य प्रसंस्करण और पेय पदार्थ:-

कृषि आधारित उद्योगों के विकास हेतु खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों और मूल्यवर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न केन्द्रीय क्षेत्र की योजनाओं को लागू करता है। हाल ही में भारत सरकार ने नई केंद्रीय क्षेत्र योजना-प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना (पीएमकेएसवाई) के तहत योजनाओं को 2016-20 की अवधि के लिए रुपए 6,000 करोड़ के आवंटन

के साथ पुनः संचालित किया है। इस योजना में निम्नलिखित घटक संस्थापित किए गए हैं:-

(अ) मेगा फूड पार्क

(ब) एकीकृत कोल्ड चेन तथा मूल्यवर्धित आधारभूत ढांचा

(स) खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता आश्वासन आधारभूत ढांचा

(द) मानव संसाधन विकास तथा संस्थाएं।

प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना (पीएमकेएसवाई) में तीन नई योजनाएं शामिल हैं।

कृषि प्रसंस्करण समूहों के लिए आधारभूत संरचना,

विनिर्माण और विपणन सुविधाओं का निर्माण

खाद्य प्रसंस्करण और संरक्षण क्षमता का निर्माण/विस्तार।

प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना (पीएमकेएसवाई) के द्वारा मेवात क्षेत्र में खाद्य एवं पेय पदार्थों पर आधारित उद्योगों के विकास को बढ़ावा मिला है। अलवर एवं भरतपुर जिले के मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित खाद्य पदार्थों के उद्योगों में सरसों के तेल की मिलें, तिलहन का तेल मिलें, आटा चक्की, दाल पिसाई चक्की, गुड़ उद्योग एवं पेय पदार्थों में गन्ना का रस, फलों का जूस एवं सब्जियों का विक्रय आदि प्रमुख है।

(अ) खाद्य तेल उद्योग:

यहाँ पर सरसों का उत्पादन सर्वाधिक मात्रा में होता है इसलिए यहाँ सरसों का तेल के लघु उद्योग बहुत अधिक विकसित हैं। मेवात क्षेत्र में कुल 238 तेल मिल स्थापित हैं। सबसे अधिक तेल मिले अलवर शहर में 48 एवं सबसे कम उमरैण में 08 मिले हैं। यहाँ पर कुछ मात्रा में तिल का तेल भी निकाला जाता है। कपास के बिनोला से भी यहाँ तेल निकाला जाता है। तेल निकालने से शेष बचें अवशिष्ट खल का भी यहाँ पर व्यापार होता है। अतः इस क्षेत्र में रामगढ़, बड़ोदा मेव, लक्ष्मणगढ़, गोविन्दगढ़, खेरली, कठूमर, खैरथल, किशनगढ़बास, तिजारा, मुण्डावर , सीकरी, नगर, कामां, पहाड़ी, गोपालगढ़, डीग आदि में तेल की मिलें अधिक विकसित है।

(ब) गुड़ एवं खाँड़सारी उद्योग:

भरतपुर जिले के मेवात क्षेत्र में जलस्तर ऊँचा होने, वर्षा की अधिकता, रूपारेल नदी जल प्रवाह एवं उपजाऊ भूमि होने के कारण गन्ना का उत्पादन होता है इसलिए यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में गुड़ एवं खाण्डसारी लघु उद्योग विकसित हैं। स्थानीय किसानों ने अपने खेतों के आसपास गुड़ बनाने की भट्टियाँ लगाई हुई हैं। मेवात क्षेत्र में गुड़ एवं खाण्डसारी की कुल 24 लघु इकाईयाँ कार्यरत है इसमें से सबसे अधिक कामां तहसील में 08 एवं सबसे कम गोविन्दगढ़ तहसील में केवल 02 स्थापित हैं। यह उद्योग सीकरी, पहाड़ी, गोपालगढ़, कामां, नगर, डीग एवं गोविन्दगढ़ के आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों में फैला हुआ है। इस गुड़ आस पास के बाजार की आपूर्ति होती है।

2. कपास उद्योग:

मेवात क्षेत्र में कपास उद्योग को अत्यधिक रोजगार प्रदान करने वाला माना जाता है। मेवात क्षेत्र में कुल 60 कपास के कारखाने स्थापित है। सबसे अधिक कपास के कारखाने गोविन्दगढ़ में 15 एवं सबसे कम डीग में केवल 01 कारखाना स्थापित है। यह उद्योग 25 प्रतिशत लोगों को सीधे और अन्य 10 प्रतिशत लोगों को सम्बद्ध क्षेत्रों में रोजगार प्रदान करता है, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीण पुरुष एवं महिलाएं शामिल हैं। भारतीय कपास उद्योग काफी हद तक असंगठित है और उच्च-उत्पादन तथा श्रम लागत से ग्रस्त है। उद्योग के अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं:-

पुरानी मशीनरी, कच्चे माल की गुणवत्ता और घरेलू व अन्तरराष्ट्रीय बाजारों में परिवर्धित मूल्य पर कपास उत्पादों के लिए समुचित-स्तर का अभाव। अलवर एवं भरतपुर जिले के मेवात क्षेत्र में उपजाऊ भूमि, वर्षा की अधिकता एवं अनकूल तापमान के कारण कपास उत्पादन की आदर्श दशाएँ मिलती हैं। यहाँ पर कामां, नगर, सीकरी, पहाड़ी, डीग, गोविन्दगढ़, लक्ष्मणगढ़, कठूमर, रामगढ़, किशनगढ़बास, तिजारा, भिवाड़ी, मुण्डावर, उमरैण एवं कोटकासिम में कपास का उत्पादन होता है। गोविन्दगढ़ क़स्बे में 05 कपास के बड़े कारख़ाने लगे हुए हैं। इस कस्बे में 10 लघु कपास इकाईयाँ कार्यरत हैं। गोविन्दगढ़ के पास न्यान्या गाँव में एक कपास का लघु कारखाना स्थापित है। अलवर के मत्स्य आद्योगिक क्षेत्र में 04 कपास के कारखाने स्थापित हैं। सीकरी में 02 , नगर में 01, बेरु में 01, डीग में 01, कामां में 03, खैरथल में 04, उमरैण में 03, लक्ष्मणगढ़ में 03, तिजारा में 03 एवं भिवाड़ी में 10 कपास के लघु कारख़ाने लगाए गए हैं।

3. सन उद्योग:

मेवात क्षेत्र में उपजाऊ भू-भाग में सन का उत्पादन भी किया जाता है। मेवात क्षेत्र में सन के घरेलू उद्योगों की कुल सँख्या 115 है जिसमें से सबसे अधिक कामां में 13 एवं सबसे कम

www.ignited.in

तिजारा एवं गोविन्दगढ़ में 04 हैं। अलवर एवं भरतपुर में सन उत्पादन क्षमता 208 मीट्रिक टन है, जिसमें से मेवात क्षेत्र में 145 मीट्रिक टन सन का उत्पादन होता है। यहाँ पर सन से रस्सी बनाने, चारपाई बुनने एवं टाट बनने के लघु घरेलू उद्योग प्रचलित हैं। ये उद्योग कामां, गोपालगढ़,

तालिका सँख्या:- 1

मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों का वितरण 2017-18

क्रम सँख्या	तहसील एवं पंचायत समिति	तेल मिलों की सँख्या	कपास के कारखानों की सँख्या	सन की इकाइयों की सँख्या	लघु डेयरी इकाइयों की सँख्या
01	गोविन्दगढ़	13	15	04	21
02	लक्ष्मणगढ़	11	03	09	25
03	रामगढ़	10	04	06	23
04	कठूमर	18	04	08	28
05	तिजारा	11	03	04	31
06	उमरैण	08	03	08	36
07	कोटकासिम	09	02	05	37
08	मुण्डावर	10	02	07	32
09	किशनगढ़बास	25	08	09	38
10	डीग	14	01	11	41
11	नगर	13	04	10	32
12	पहाड़ी	09	02	07	29
13	कामां	16	03	13	41
14	एम आई ए	23	04	05	26
15	अलवर	48	02	09	43
	कुल योग	238	60	115	483

स्त्रोत :– जिला औद्योगिक केन्द्र , अलवर एवं भरतपुर

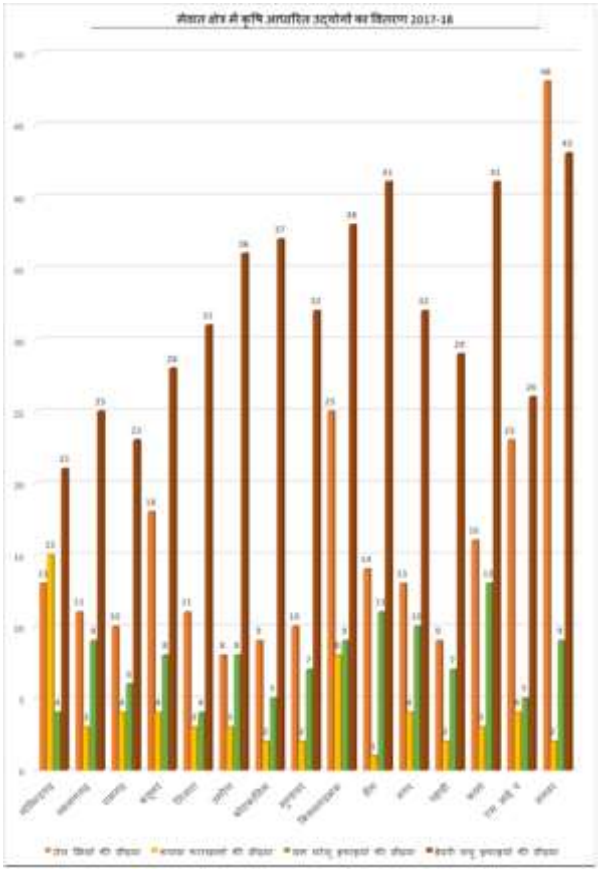

सीकरी, बेरु, गुलपाड़ा, डीग, नगर, गोविन्दगढ़, कठूमर, लक्ष्मणगढ़, बड़ौदा मेव, बगड़ तिराया, रामगढ़, नोगाँवा, उमरैण, कोटकासिम, तिजारा, किशनगढ़बास में अधिक प्रचलित है।

4. पशुपालन एवं डेयरी उद्योग:

राजस्थान के मेवात क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पशुपालन व्यवसाय का विशेष महत्व है। मेवात में पशुपालन न केवल जीविकोपार्जन का आधार है, बल्कि यह उनके लिये रोजगार, आय प्राप्ति का सुदृढ़ एवं सहज साधन भी है। मेवात में पशुपालन व्यवसाय से ग्रामीण आबादी लाभान्वित होती है। डेयरी पालन उद्योग में दुधारू पशुओं को पाला

जाता है। इनमें गाय, भैंस व बकरी उल्लेखनीय हैं। भैंस और गाय की अपेक्षा बकरी का दूध मात्रा में कम होता है। भैंस और विदेशी नस्ल की गायें ज्यादा मात्रा में दूध देती हैं। मेवात क्षेत्र में 55 प्रतिशत दूध भैंस से मिलता है। अलवर जिले के किसानों को पशु खरीदने के लिए जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि.(सरस डेयरी) अब ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स से ऋण उपलब्ध करा रही है। किसान एक लाख से दस लाख रुपए तक का ऋण 8.45 प्रतिशत की ब्याज दर पर 5 साल तक के लिए ले सकते हैं। इसमें किसान को एक लाख रुपए के ऋण से दो दुधारू पशु गाय या भैंस खरीदनी होंगी। बैंक यह ऋण दो किश्तों में उपलब्ध करा रही है। पशुओं का बीमा भामाशाह पशु बीमा योजना के तहत कराया जा रहा है। डेयरी अभी तक करीब 2500 किसानों के पशुओं का बीमा करा चुकी है। बैंक से एमओयू कर किसानों को ऋण उपलब्ध कराने का सरस डेयरी का उद्देश्य किसानों को उन्नत नस्ल के दुधारू पशु दिलवाकर जिले में दूध उत्पादन को बढ़ाना है। अलवर जिले में डेयरी की समितियों से करीब 27 हजार पशुपालक किसान जुड़े हुए हैं। जिसमें से अलवर ज़िले के मेवात क्षेत्र के लगभग 21 हजार पशुपालक किसान डेयरी उद्योग से जुड़े हुए हैं। भरतपुर ज़िले के मेवात क्षेत्र में करीब 16 हजार किसान पशुपालन एवं डेयरी उद्योग में सलग्न हैं। मेवात क्षेत्र में लघु डेयरी उद्योगों की कुल सँख्या 483 है इसमें सबसे अधिक अलवर में 43 एवं सबसे कम गोविन्दगढ़ में 21 है।यहाँ पर सीकरी, पहाड़ी, कामां में दुग्ध अवशीतन केंद्र स्थापित है। अलवर ज़िले में सरस् डेयरी उद्योग, मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र में थापर मिल्क फक्ट्री (लीज पर), उमरैण, भिवाड़ी एवं तिजारा में लघु दुग्ध अवशीतन केन्द्र स्थापित है।

निष्कर्ष:

मेवात क्षेत्र में कृषि आधारित औद्योगिक क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्रों में समान आय और रोजगार के अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए अपनी उच्च-क्षमता के बावजूद अविकसित रह गया है। उपलब्ध जानकारियों की समीक्षा इंगित करती है कि मेवात में कृषि-आधारित इकाइयों के प्रलंबित मुद्दों का

समाधान किया जाना है जैसै कि, वित्त, औद्योगिक नीति, अनुसंधान और विकास, बुनियादी सुविधाएं विपणन, उत्पादन और मानव संसाधन सम्बन्धी चिंताएं। मेवात में कृषि-आधारित उद्योगों के समक्ष समस्याओं एवं सम्बद्ध प्रमुख मुद्दों को दर्शाया गया है। अलवर भरतपुर का मेवात क्षेत्र कृषि-आधारित उद्योग देश के भीतर और बाहर प्रतिस्पर्धी लाभ की धारणा के अनुरूप है। वे अधिशेष ग्रामीण श्रम को रोजगार प्रदान करने के लिए एक सुरक्षा कवच की भूमिका निभा सकते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी/प्रच्छन्न रोजगार की समस्या का समाधान कर सकते हैं। यहाँ वास्तविक चुनौती यह है कि राजस्थान सरकार अपने योजनाबद्ध और नीतिगत हस्तक्षेप को कितने प्रभावी ढंग से लागू करती है ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी सामाजिक-आर्थिक संरचना, कृषि उत्पादन प्रणाली और बुनियादी कृषि विनिर्माण विशेषताओं की पहचान को कम किए बिना एक सर्वांगीण औद्योगिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

Agro Eco-system Director Arid (2008) Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur.

Annual Report (2008) Agriculturl Project Rajasthan, Govt., Jaipur.

Bhalla, A.R., (1978)] Rajasthan Ka Bhugol" , Kuldeep Publishers, Ajmer.

Bhalla, G.S. (1972), Changing structure of agriculture in Haryana (a study of the impact of green revolution) 1969-70.

Bhatia A and Bhatia H. (2000) Introductive Bio-Environment, Rajasthan Hindi Granth Akadmi, Jaipur

Climate Change, (2001), International Pannel on Climate Change, Cambridge University Press.

Doi R.D. (1991), Semi-Arid Land Systems use and capability.

Katariya, S.R. (1973), " Sprinkler Irrigation with Particular Reference to Rajasthan" , Univsersity of Roorkee, Unpublished M.E. Dissertation, Roorkee.

Mehta, M.L.K. and Sharma, P.C. (1997), " Water Resources in Rajasthan ans its Efficient Management in Agriculture" , Seminar on Irrigation, Government of Rajasthan.

Rajasthan Govt. (2008) Production Movements in Water Shed Areas., District Counsil Rajasthan, Jaipur.

Yadav, S.B. (1994) Resources and Socio-Economic Development in Haryana. Unpublished Ph.D. Thesis Deptt. Of Geog., Univ. of Rajasthan, Jaipur.

राजस्थान सरकार: एग्रीकलचर स्टेटिकल आर्थिक एवं सांख्यिकी जयपुर 2001 से 2010

राजस्थान सरकार: 2011 जनगणना विभाग, जयपुर

राजस्थान सरकार: सेंसस एण्ड मूक जनगणना विभाग, जयपुर 2011

राजस्थान सरकार: उन्नत कृषि विधियाँ (खरीफ की प्रमुख फसल) कृषि विभाग, राजस्थान सरकार

राजस्थान सरकार: उन्नत कृषि विधियों (रबी की प्रमुख फसल) कृषि विभाग, राजस्थान सरकार

कृषि सांख्यिकीय (2006): आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, राजस्थान, जयपुर

सामाजिक सूचना योजना: आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, योजना भवन, राजस्थान जयपुर

Corresponding Author

Chirnji Lal Raigar*

Assistant Professor, Department of Geography, Government PG College, Rajgarh, Alwar, Rajasthan

www.ignited.in